1857 की क्रांति में चतरा जिले की भूमिका

समाज विज्ञान संकाय के इतिहास विषय में पीएच० डी० की उपाधि के लिए प्रस्तुत शोध प्रारूप

राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोध निर्देशक :

डॉ० प्रकाश कुमार झा
एसोसिएट प्रोफेसर
मारवाड़ी कॉलेज
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी :

दिव्य अनिश

शोध शीर्षक –1857 की क्रांति में चतरा जिले की भूमिका

1. शोध परिचय :–

छोटानागपुर का प्रवेश द्वार कहे जाने वाला चतरा जिले का एक शानदार अतीत एवं ऐतिहासिक विरासत है। पुरातात्विक स्थल के रूप में देश में अपनी एक अलग पहचान रखने वाला यह जिला ऐतिहासिक अभिलेखों के अनुसार 232 ई॰पू. में अशोक द्वारा शासित आटविक राज्य का हिस्सा था। मध्यकाल में यह क्षेत्र सल्तनतकालिन एवं मुगलकालिन शासकों के अधीन रहा। मुगल साम्राज्य के अंतगर्त यह क्षेत्र बिहार सूबा का हिस्सा था। 1769 ई॰ में यह क्षेत्र ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के नियंत्रण में आ गया। चतरा की भूमि पर महान समाज सुधारक राजा राम मोहन राय ने भी 1805–06 ई॰ में डीप्टी रजिस्ट्रार के रूप में कार्य किया।

1857 का भारतीय विद्रोह भारत में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के खिलाफ एक व्यापक विद्रोह था। यह विद्रोह ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ संगठित प्रतिरोध की पहली अभिव्यक्ति थी। 10 मई 1857 को मेरठ से विद्रोह की शुरूआत ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना के सिपाहियों के विद्रोह के रूप में शुरू हुई लेकिन जल्द ही जनता की भागीदारी इसमें शामिल हो गई। चतरा 1857 की क्रांति में एक आकर्षक अध्याय प्रदान करता है। झारखण्ड मे 1857 की क्रांति की शुरूआत 12 जून 1857 को देवघर जिले के रोहिणी गाँव से शुरू हुई। तथा चतरा में 1857 की क्रांति की लड़ाई 02 अक्टूबर 1857 को लड़ी गई। इस लड़ाई की कहानी आज तक जुबानी ही चली आ रही है। इतिहास के इन पीले पन्नों को खंगालने की कोशिश बहुत ही कम हुई है। 02 अक्टूबर को अहिंसा दिवस के साथ चतरा शहर जंग–ए–आजादी की पहली लड़ाई की खूनी बरसी भी मनाती है। इस दिन यह शहर उन क्रांतिकारियों को याद करता है, जिन्हें एक ही कब्र में दफन कर दिया गया था। झारखण्ड के पुस्तकालयों (राँची, हजारीबाग) और सरकारी अभिलेखागारों में इस लड़ाई और उसकी महत्व के रिकॉर्ड कम मिलते हैं। परन्तु रामगढ़ बटालियन से बागी हुए, तोपो, हाथियों और हथियारों से लैस क्रांतिकारियों को रोकना अंग्रेजो के लिए कितना महत्वपूर्ण था इसका अन्दाजा हर दिन होने वाले दर्जनो टेलिग्राम संदेशों के आदान–प्रदान से लगाया जा सकता है।

1.1 साहित्य समीक्षा :–

प्रस्तुत शोध से संबंधित विभिन्न साहित्यों के गहन अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि झारखण्ड में 1857 की क्रांति पर अनेक विद्वानों और इतिहासकारों द्वारा अपने ग्रन्थों में उल्लेख किया गया है। पी॰सी॰ राय चौधरी की कृति **'द सिपॉय म्यूटिनी इन छोटानागपुर'** में

झारखण्ड के विभिन्न क्षेत्रों में क्रांति का वर्णन मिलता है। इस पुस्तक में अंग्रेज अधिकारियों के द्वारा तत्कालिन परिस्थितियों में लिखे पत्रों का भी वर्णन मिलता है। **एल.एन. राणा** ने भी अपनी पुस्तक **'द 1857 अप्राईसिंग एण्ड सिविल रिबेलियन इन झारखण्ड'** में 1857 की क्रांति के समय की सामाजिक राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियों का वर्णन है। इस पुस्तक में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के तहत स्थानीय जनजाति और समुदायों पर किए गए उत्पीड़न और अत्याचार का भी उल्लेख मिलता है। शशांक सिन्हा की पुस्तक **'ऑन द मार्जिन्स ऑफ ए नेशनल अप्राईसिंग : डायनामिक्स ऑफ 1857 इन छोटानागपुर'** स्थानीय नेताओं की 1857 की क्रांति में भागीदारी पर प्रकाश डालती है। **जे.सी.झा.** द्वारा रचित लेख **चतरा की लड़ाई** में मेजर इग्लिश के नेत्त्व में कम्पनी की सेना तथा विद्रोहियों के बीच लड़ी गई युद्ध का वर्णन मिलता है। **बिस्वामॉय पति** द्वारा रचित पुस्तक **भारत में 1857 का महान विद्रोह : अपराधो, प्रतियोगिताओं और विविधताओं की खोज** में विद्रोहियों की गतिविधियों का विस्तृत वर्णन मिलता है। **डॉ०बी० वीरोत्तम** द्वारा रचित **पुस्तक झारखण्ड इतिहास एवं संस्कृति** में चतरा में 1857 की क्रांति के पूर्व एवं क्रांति के दौरान उत्पन्न परिस्थितियों का वर्णन किया गया है।

इस विषय से संबंधित एक रिपोर्ट जो 1857 में लंदन से प्रकाशित हुई और ब्रिटिश संसद की दोनों सदनों में पेश की गई, **म्यूटिनी इन द ईस्ट इंडिज** है। इस रिपोर्ट में चतरा में हुई इस जंग को बैटल ऑफ चतरा कहा गया। इस रिपोर्ट में एक टेलिग्रांम संदेश का जिक्र है, जो कर्नल फिशर द्वारा 14 सितम्बर दोपहर 2:20 बजे कमांडर इन चीफ फोर्ट विलियम को भेजा गया। कर्नल फिशर ने लिखा एक्सीलेंसी आज सुबह विद्रोही छोटानागपुर से निकल गए है. कैप्टन डाल्टन के मुताबिक ये लोग पलामू होते हुए रोहतासगढ़ की ओर जाने वाले हैं, मैं उन्हें चतरा और कुन्दा मार्ग पर रोकने के लिए तैयार हूँ।

इस विषय से संबंधित एक अन्य दस्तावेज 24 सितम्बर 1857 को कर्नल फिशर द्वारा चीफ ऑफ स्टॉफ को भेजा गया टेलिग्राम संदेश है जिसमें कर्नल फिशर लिखते हैं, मेजर इंग्लिश को संदेश भेज दिया जाए की विद्रोहियों का पता लगते ही उन पर आक्रमण किया जाए चाहे हजारीबाग में या फिर चतरा में।

इस विषय से संबंधित एक अन्य टेलिग्राम में 28 सितम्बर 1857 को हजारीबाग से मेजर इंग्लिश ने कोलकात्ता संदेश भेजा, जिसमें उन्होंने लिखा अगर दुश्मनों ने पहले पोजिशन ले ली तो उन्हें हराना मुश्कील होगी मेजर सिंपसन के साथ जो सिंख बटालियन हैं वो अनट्रेन्ड है।

इस विषय से संबंधित एक अन्य टेलिग्राम संदेश 29 सितम्बर 1857 को कर्नल फिशर की ओर से कोलकात्ता भेजे गए संदेश के मुताबिक विद्रोही बालूमाथ पहुँच चुके हैं। या तो वे चतरा जाएँगे या कुन्दा उनके पास 4 तोपें हैं। और तोपों के साथ चलने में ज्यादा वक्त लगता है विद्रोहियो के साथ स्थानीय बदमाश भी मिल चुके हैं।

बैटल ऑफ चतरा का सबसे महत्वपूर्ण दस्तावेज **इंडियन हिस्टॉरिकल रिकॉर्ड कमीशन** की दसवीं बैठक की प्रोसिडिंग है जो 1927 में रंगून में हुई। इस बैठक में प्रोफेसर जे. सामदार ने बहुत ही अहम जानकारियों प्रदान की। उन्होंने अपने लेख दू फॉरगॉटन म्यूटिनी हीरोज में इस जंग के महत्व को बहुत ही विस्तार से पेश किया है।

इस विषय से संबंधित इंडियन हिस्टॉरिकल रिकॉर्ड कमीशन में प्रकाशित शेरघाटी से कोलकात्ता भेजे गए पत्र में मेजर इंग्लिश ने लिखा कि 02 अक्टूबर को रामगढ़ बटालियन के साथ भयानक युद्ध हुआ, हमारी जीत हुई, हमने 4 तोपों को अपने कब्जे में ले लिया है, 45 बैलगाड़ियों पर हथियार और रसद भी हमारे कब्जे में है, हमारे 45 लोग मारे गए हैं, हम आगे बढ़ने की स्थिति में नहीं है, हमारे चारों ओर जंगल है।

इस विषय से संबंधित एक महत्वपूर्ण जानकारी उस वक्त के कमीश्नर ई. डाल्टन को असिस्टेंट कमीशनर जे. सिंपसन की चिट्ठी से मिलती है जिसमे सिंपसन ने लिखा कि बागियों ने चतरा के पश्चिम में मजबूती के साथ कैंप कर लिया था, पूरा शहर उनके पूरब में था। शहर की तंग गलियों से जाना खुद को खतरे में डालने जैसा था। मेजर इंग्लिश ने पुरानी जेल, जो की दक्षिण की तरफ था उस पर अटैक किया। वे ऊँचाई पर थे हमने उन पर 900 गज की दूरी से इनफिल्ड गन से फायरिंग की । वे धान की खेत की ओर थे, हमारे सैनिकों को खेत में जाने में दिक्कते हो रही थी।

इस विषय से संबंधित एक अन्य पत्र में जो 26 सितंबर 1857 को कर्नल फिशर द्वारा लिखा गया, इस पत्र में कर्नल फिशर, ने चतरा से शेरघाटी जाने वाली सड़क को हर हाल में तोड़ने की सलाह दी ताकि विद्रोही शेरघाटी की ओर न जा सके। हजारों की संख्या में रामगढ़ नेटीव इन्फेंट्री के बागी जवानों को घेरने के लिए ब्रिटिश फौज के साथ सिखों की सेना भी लगी थी।

इस विषय से संबंधित एक पत्र जो 03 अक्टूबर 1857 को सिंपसन ने लिखा कि हमने एक ही गढ़ढे में रामगढ़ बटालियन के 77 बागियो के शवों को डाल दिया। सूबेदार जयमंगल पांडेय और नादिर अली जो कि घायल हो गए थे, उन्हें जंगल से पकड़कर मेरे पास लाया गया और 1857 के कानून के तहत मौत की सजा सुनाई गई।

1.2 शोध रिक्ति :–

1857 की क्रांति में छोटानागपुर का प्रवेश द्वार कहे जाने वाले चतरा की भूमिका पर सूक्ष्म तरीकों की जाँच से संबंधित साहित्य की घोर कमी है। मौजूदा अध्ययन अक्सर चतरा जैसे छोटे जिलों को छोड़कर पलामू, सिंहभूम, हजारीबाग तथा राँची जैसे प्रमुख शहरों और क्षेत्रों पर केन्द्रीत है। ऐसे गहन विश्लेषण की कमी है जो चतरा जिले में विद्रोह की घटनाओं पर व्यापक और समावेशी विवरण प्रस्तुत करता हो। इस बात पर भी शोध उपलब्ध नहीं है कि स्थानीय नेताओं, सैनिकों और यहाँ के नागरिकों ने इस घटना में क्या योगदान दिया।

1.3 शोध समस्या :–

प्रस्तावित शोध की समस्या चतरा एवं समीपवर्ती क्षेत्रों पर 1857 की क्रांति की व्यापक एवं दीर्घकालिन प्रभावों की जाँच करना है। इस शोध में चतरा के सामाजिक राजनीतिक एवं सांस्कृतिक जीवन पर 1857 की क्रांति के प्रभाव का विश्लेषण करना है। इसके साथ ही चतरा के सामाजिक राजनीतिक संदर्भ में 1857 की क्रांति की भूमिका को प्रकाश में लाया जाएगा। इन पहलुओं का अध्ययन कर 1857 की क्रांति में चतरा के ऐतिहासिक महत्व और युद्ध के परिणाम के संदर्भ में मौजूदा शोध अंतराल को भरा जा सकता है।

1.4 शोध का उद्देश्य :–

1. चतरा में क्रांतिकारियों द्वारा भारत में ब्रिटिश प्रभुत्व को चुनौती देने के सामुहिक प्रयास का अध्ययन करना।
2. 1857 के विद्रोह में चतरा के स्थानीय नेताओं और प्रमुख व्यक्तियों की भूमिका का पता लगाना।
3. चतरा में क्रांतिकारियों के कुचले जाने से स्थानीय जनता पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण करना।
4. चतरा में क्रांतिकारियों के सामने आने वाली चुनौतियों और क्षेत्र पर तात्कालिन और दीर्घकालिक प्रभावों का विश्लेषण करना।

1.5 शोध परिकल्पना :–

1. 1857 की क्रांति में चतरा, क्रांतिकारियों और अंग्रेजो के लिए निर्णायक स्थान रहा।
2. 1857 की क्रांति में चतरा की लड़ाई का ऐतिहासिक महत्व था।

3. क्रांतिकारियों की असफलता का प्रमुख कारण कुशल नेतृत्वकर्त्ता का अभाव था।
4. चतरा में क्रांतिकारियों की असफलता का 1857 की क्रांति पर व्यापक प्रभाव पड़ा।
5. चतरा में शहीद हुए क्रांतिकारियों की 1857 की क्रांति में बड़ी भूमिका थी।

शोध विधि :–

शोध विधि मुख्य रूप से विश्लेषणात्मक एवं वर्णनात्मक होगी। इसमें प्राथमिक स्रोतो के रूप में समसामयिक दस्तावेज, समसामयिक सरकारी और गैर सरकारी दस्तावेज तथा मौखिक स्रोतो के अधार पर उपलब्ध साक्ष्यों को एकत्रित कर आंतरिक और बाह्य परिक्षण द्वारा स्रोतो को स्थापित करेगें और विषय वस्तु का आंकलन करेगें। द्वितीयक स्रोतो के रूप में इतिहासकारों द्वारा लिखित ग्रंथों का अध्ययन कर शोध कार्य को पूर्ण किया जाएगा। इन ग्रंथों को एकत्रित करने के लिए विभिन्न पुस्तकालयों, संग्राहलयों, अभिलेखागारों इत्यादि शैक्षणिक संस्थानों में भ्रमण किया जाएगा।

इसके अतिरिक्त विभिन्न वेब स्रोतो का उपयोग कर इस कार्य को पूर्ण किया जाएगा। इसके लिए JSTOR, INFLIBNET, SODHGANGA, SODHDHARA, NATIONAL DIGITAL LIBRARY, INTERNET ARCHIVE जैसे वेबसाईटों का उपयोग कर शोध संबंधी सामग्री इक्कट्ठा किया जएगा।

2.1 डाटा संग्रह के लिए उपकरण एवं तकनीके :–

ऐतिहासिक शोध में अक्सर जानकारी इक्कट्ठा और व्याख्या करने के लिए विभिन्न प्रकार के उपकरण शामिल होते हैं। कुछ प्रमुख उपकरण हैं–

1. **डिजिटल संग्रह :–** कई ऐतिहासिक दस्तावेज अब ऑनलाइन उपलब्ध हैं, जिससे डिजिटलीकृत संग्रह दूरस्थ पहुँच के लिए मूल्यवान हो गए हैं, जिनका उपयोग इस शोध में किया जाएगा।

2. **ऐतिहासिक मानचित्र :–** मानचित्र समय के साथ भौगोलिक परिवर्तनों को देखने और ऐतिहासिक घटनाओं के संदर्भ को समझने में मदद करेंगे।

3. **मैखिक इतिहास :–** कुछ व्यक्तियों के साक्षात्कार से हमें अद्वितीय संभावनाएँ और अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं, जो लिखित अभिलेखों में नहीं मिलते हैं।

4. **कालक्रम :–** घटनाओं को कालानुक्रमिक रूप से व्यवस्थित करके घटनाओं के महत्व को समझने का प्रयास किया जाएगा।

2.2 डेटा का विश्लेषण :–

ऐतिहासिक शोध में सटीक और सार्थक वर्णन के निर्माण के लिए डेटा तथा तथ्यों का विश्लेषण महत्वपूर्ण है। शोध कार्य के लिए निम्नलिखित विधियों का उपयोग किया जाएगा।

1. **स्रोत मूल्यांकन :–** प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतो के लेखकों की विश्वसनीयता पूर्वाग्रह और संभावित सीमाओं पर विचार किया जाएगा।

2. **प्रति सत्यापन :–** समानताओं और विसंगतियों की पहचान करने के लिए कई स्रोतो से प्राप्त जानकारियाँ की तुलना की जाएगी, विभिन्न स्रोत में डेटा की स्थिरता विश्वसनीयता को बढ़ाती है।

3. **प्रासंगिकता –** डेटा के आसपास के ऐतिहासिक संदर्भ को समझने के लिए हम उन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों का विश्लेषण करेंगे जो घटनाओं या संभावित घटनाओं को प्रभावित कर सकते है।

4. **आलोचनात्मक सोच** – डेटा की वस्तुनिष्ठ व्याख्या करने के लिए आलोचनात्मक सोच कौशल का उपयोग किया जाएगा, धारणाओं पर सवाल उठाए जाएँगे, व्याख्याओं को चुनौती दी जाएगी और ऐतिहासिक व्याख्यानों की जटिलता को पहचाना जाएगा।

5. **संश्लेषण** – हम विभिन्न दृष्टिकोणों और डेटा के प्रकारों को जोड़कर अतीत की सूक्ष्म समझ प्रस्तुत करने के लिए विभिन्न साक्ष्यों को एक रचनात्मक रूप में एकीकृत करेंगे।

3. शोध का महत्व :–

आधुनिक भारत के इतिहास में 1857 की क्रांति का एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। मेरे इस शोध कार्य में 1857 की क्रांति में चतरा की भूमिका से संबंधित सामाजिक एवं राजनीतिक पहलुओं की चर्चा होगी। जिससे शोधार्थी एवं विद्यार्थी आदि लाभान्वित होंगे। इस शोध कार्य से औपनिवेशिक काल में चतरा की स्थिती पर बहुत सारी बातें उभर कर आएँगी जो कि 1857 की क्रांति में चतरा की भूमिका का समुचित मूल्यांकन करने में लाभकारी सिद्ध होगी।

4. वर्तमान परिदृश्य में विषय की आवश्यकता एवं उपयोगिता :–

1857 का विद्रोह भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना थी। इस अवधि के दौरान चतरा की भूमिका को समझने से क्षेत्र की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, यहाँ के लोग और उनकी प्रेरणाओं के बारे में जानकारी मिलेगी। यह जानकारी चतरा के लोगों में गर्व और पहचान की भावना को बढ़ावा देगा और भारतीय इतिहास की व्यापक समझ में योगदान देगा। 1857 की घटनाएँ चतरा में ऐतिहासिक स्थल और कलाकृति से जुड़ी हुई हैं। इस संदर्भ में चतरा की भूमिका की खोज इन सांस्कृतिक और ऐतिहासिक अवशेषों को संरक्षित करनें में मदद कर सकती है। यह स्थानीय और राष्ट्रीय विरासत को बढ़ावा देने के लिए संग्रहालयों विरासत स्थलों और शैक्षिक कार्यक्रमों के विकास को भी प्रोत्साहित करेगा।

5. मौजूदा ज्ञान मे योगदान :—

1857 की क्रांति में छोटानागपुर क्षेत्र के चतरा जिले में क्रांतिकारियों एवं अंग्रेजी सेना के बीच संघर्ष का ऐतिहासिक विश्लेषण वर्तमान ज्ञान में योगदान देने की क्षमता रखता है। मौजूद साहित्य ने इस क्षेत्र की तात्कालीन घटनाओं के विभिन्न पहलुओं को छुआ है, फिर भी संघर्ष का एक केन्द्रित ऐतिहासिक अन्वेषण सीमित है। यह शोध चतरा जिले के अंतर्निहित ऐतिहासिक विकास की व्यापक समझ प्रदान करके इस अंतर को भरने का प्रयास करेगा। ऐसा योगदान शोधकर्त्ताओं तथा ऐतिहासिक संदर्भ की गहरी समझ चाहने वाले लोगों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

6. भविष्य कार्य :—

विशेष रूप से चतरा क्षेत्र में आगे के शोध के लिए संभावित मार्गों की पहचान करना।

7. अध्यायीकरण :—

प्रस्तावित शोध प्रबंध को निम्नलिखित अध्यायों के अंतगर्त प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाएगा।

भूमिका

प्रथम अध्याय :— ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

द्वितीय अध्याय :– 1857 की क्रांति में चतरा

तृतीय अध्याय :– असफलता के कारण

चतुर्थ अध्याय :– चतरा की लड़ाई का 1857 पर प्रभाव

पंचम अध्याय :– चतरा के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों का संक्षिप्त परिचय।

निष्कर्ष

संदर्भ ग्रन्थ सूची

परिशिष्ट।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

प्राथमिक स्रोत :–

1. ब्रिटिश आधिकारिक रिपोर्ट – म्यूटिनी इन द ईस्ट इंडिज
2. शिलालेख – फांसीयारी तालाब चतरा का शिलालेख
3. समसामायिक मानचित्र – जे सिंपसन द्वारा तैयार किया गया लड़ाई का स्केच
4. डिस्ट्रीक्ट गजेटियर :–
    - चौधरी, पी० सी० राय, बिहार डिस्ट्रीक्ट गजेटियर हजारीबाग, सेक्रेटेरियट प्रेस, 1957
    - हैलेट , एम० जी०, बिहार एण्ड ओडिसा डिस्ट्रीक्ट गजेटियर राँची, 1917
    - कुमार , एन०, बिहार डिस्ट्रीक्ट गजेटियर राँची, 1970
    - लिस्टर, ई० , बिहार एण्ड ओड़िसा डिस्ट्रीक्ट गजेटियर हजारीबाग, 1917
    - चौधरी, पी० सी० राय, बिहार डिस्ट्रीक्ट गजेटियर पलामू, पटना, 1961

द्वितीयक स्रोत :–

1. मंडल. अशोक कुमार, झारखण्ड में 1857 की क्रांति का इतिहास, 2014

2. गुप्ता. गौतम, 1857 द अपराइसिंग, 2017

3. श्रीकांत. प्रसन्न कुमार चौधरी, 1857 बिहार झारखण्ड में महायुद्ध, 2015

4. आलम, मो० इफ्तेखार, जंगे आजादी की यादे, शिवांगन पब्लिकेशन, राँची, 2008

5. एडमंड, ई०, दि बंगाल सिविल सर्विसेज ग्रेडेशन लिस्ट, कलकत्ता, 1845

6. बंगाल होम पब्लिक प्रोसिडिंग्स, 1861–1889.

7. औरिजिन कंस्लटेशस, बंगाल होम पब्लिक, 1857.

8. मिश्रा. सुशीला, हिस्ट्री ऑफ द फ्रीडम मूवमेन्ट इन छोटानागपुर (1885–1947) काशी प्रसाद जयसवाल रिसर्च इंस्टीट्यूट, पटना 1990।

9. अहलुवालिया. एम., फ्रीडम स्ट्रगल इन इंडिया 1858–1900, दिल्ली, 1965।

10. ग्रीनवेड. ए. प्रेस. राँची. 1964 छोटानागपुर पास्ट ऐंड प्रेजेट. सुदर्शन प्रेस, राँची, 1964।

11. बनर्जी. मान गोविदं, ऐन हिस्टोरिकल आउटलाइन ऑफ प्री. बिटिश छोटानागपुर, राँची, 1996

12. राय चौधरी, पी. सी.,1857 इन बिहार, छोटानागपुर एण्ड संथाल परगनाज पटना, 1957

13. श्रीकांत, प्रसन्न कुमार चौधरी, 1857 बिहार–झारखण्ड में महायुद्ध, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2008।

14. वर्मा, विमला चरण एंव विक्रम केशरी, छोटानागपुर का भूगोल राजेश पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1997।

15. जे. आर बाल्डविन, अनटोल्ड स्टोरी ऑफ इंडियन म्यूटनी, लंदन, 1897

16. ताराचंद. हिस्ट्री ऑफ फीडम मूवमेंट इन इंडिया, 1972

17. सुरेन्द्र प्रताप सिन्हा छोटानागपुर में जनक्रांतिः 1857 तथा उनके नायक, आदिवासी, गणतंत्र विशेषांक, 1968 ई.

18. दत्ता, के. के., हिस्ट्री ऑफ फ्रीडम मूवमेंट इन बिहार, 1957, वोल्यूम– I, II, III, पटना, गर्वमेंट ऑफ बिहार।

19. राणा एल. एन., द. 1857 अप्राईसिंग एण्ड सिविल रिबेलियन इन झारखण्ड।

20. सिन्हा. शशांक, ऑन द मार्जिन्स ऑफ ए नेशनल अप्राईसिंग ऑफ ए नेशनल अप्राईसिंग डायनामिक्स ऑफ 1857 इन छोटानागपुर।

21. लाल. विनोद कुमार, उत्तरी छोटानागपुर में स्वतत्रंता आंदोलन एवं चतरा–एक ऐतिहासिक परिदृश्य 1857–1947, 2023

22. शफीक, सैम्युल०, ब्रिटिश रिएक्शन टू द सिपॉय म्यूटिनी, 1857 – 1858

23. सामदार, जे०, टू फॉरगॉटन म्यूटिनी, 10वीं कार्यवाही इंडियन हिस्टॉरिकल रिकॉर्ड कमीशन, रंगून, 1927

पत्र–पत्रिकाएँ :–

- जर्नल ऑफ द एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल
- जर्नल ऑफ द बिहार एंड ओड़िया रिसर्च सोसाइटी
- नवभारत टाइम्स, 02 अक्टूबर 2021
- दैनिक जागरण 25 जनवरी 2023
- दैनिक जागरण 04 अक्टूबर 2020
- प्रभात खबर 14 अगस्त 2020